जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्यः 6 रुपये

गाँधी ऐसे थे

विष्णु नागर

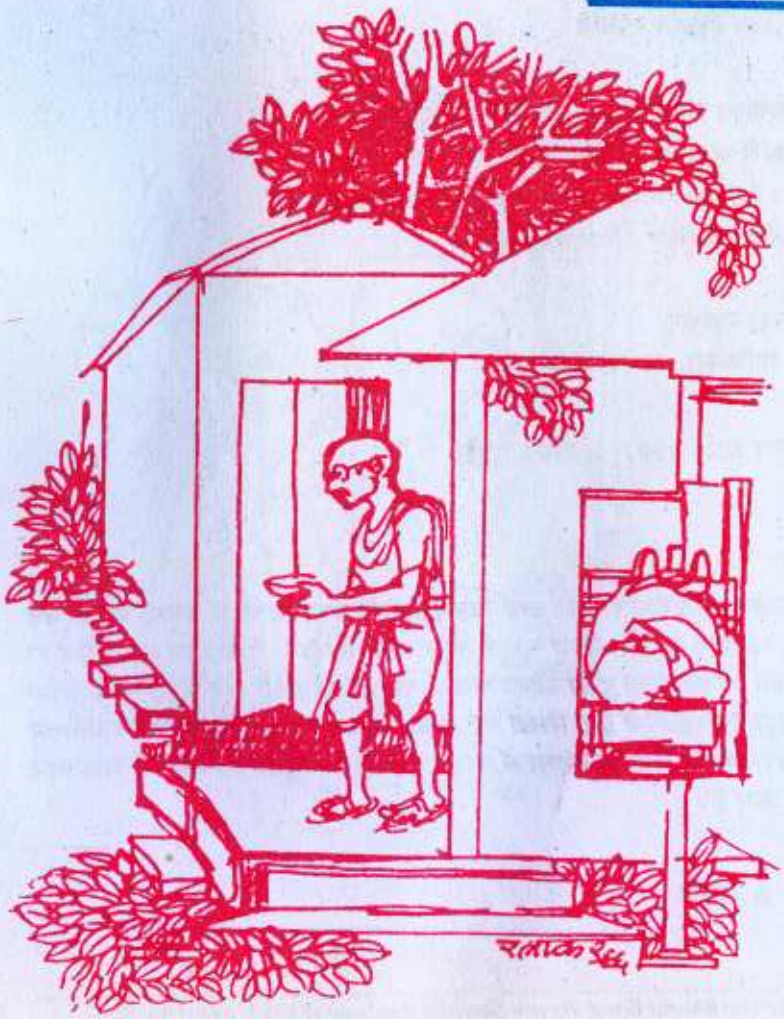

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

गाँधी ऐसे थे : विष्णु नागर
Gandhi aise thhe : Vishnu Nagar

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: रत्नाकर
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 1999, 2003

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 6 रुपये

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi, Basement of Y.W.A. Hostel No. II, C-Block, Saket, New Delhi - 110017, Phone : 011 - 6569943, Fax : 91 - 011 - 6569773,***

गाँधी ऐसे थे

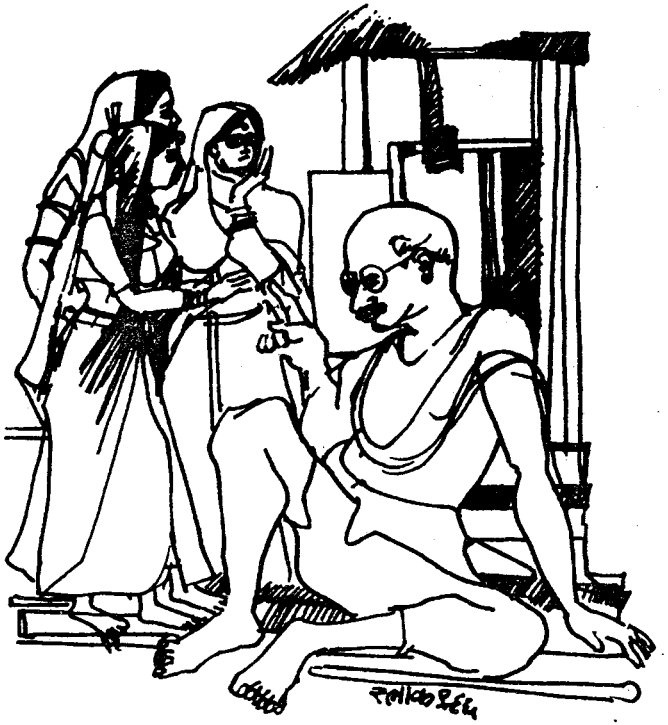

विष्णु नागर

गाँधी ऐसे थे

भारत की आजादी के बारे में बातचीत करने के लिए महात्मा जी पानी के जहाज से इंग्लैंड जा रहे थे।

जहाज में चढ़ने के बाद महात्मा जी ने अपने सामान की जाँच की। ढेर-सा सामान पाया। महात्मा जी ने अपने सेक्रेटरी महादेव भाई से पूछा: ''इतना सामान तुम क्यों लाए? क्या ज़रूरत थी इसकी?''

महादेव भाई ने कहा कि कई दोस्तों ने हमें अपनी चीज़ें दी हैं। कई दोस्तों ने कहा कि इंग्लैंड में इस सामान की ज़रूरत ज़रूर पड़ेगी। इसलिए हमने कुछ सामान खरीद भी लिया है।''

महात्मा जी ने कहा: ''तुम दोस्तों की बात मानोगे या मेरी बात मानोगे? मुझे नहीं चाहिए इतनी चीजें।''

अदन में जहाज रूका तो महादेव भाई ने कई चीज़ें वापिस भेज दीं। महात्मा जी को बता दिया कि अब थोड़ी सी चीजें ही हमारे पास हैं।''

महात्मा जी ने कहा: ''खैर तुमने जो किया ठीक किया।

मगर याद रखो कि हमें कोई कीमती चीज़ अपने पास नहीं रखनी चाहिए। अगर तुम भारत में खादी का झोला लटकाकर घूम सकते हो तो इंग्लैंड में क्यों नहीं घूम सकते? हमें यहाँ भी मामूली आदमी की तरह रहना चाहिए।''

महात्मा जी की यह बात सुनकर महादेव भाई ने दूरबीन और सफरी चारपाई भी वापिस कर दी। एक कीमती दुशाला उनके पास फिर भी था। वह इतना मुलायम और बारिक था कि अँगूठी के बीच से निकल सकता था। उससे गाँधी जी परेशान थे।

उनसे मिलने के लिए शुएब कुरैशी आए। उन्होंने कहा:

''शुएब, किसी ने मुझे कीमती दुशाला दिया है। देनेवाले ने सोचा होगा कि करोड़ों लोगों का नेता इंग्लैंड जा रहा है। यह अंग्रेजों से बात करेगा। तब इन्हें बढ़िया दुशाला ओढ़कर जाना चाहिए। मगर कोई इसे खरीदना चाहे तो इसे बेच दो। उनसे जो रुपये मिलेंगे, वे गरीबों के काम आ जाएँगे।''

❐❐

उन दिनों गाँधी जी हरिजन कोष के लिए चंदा इकट्ठा कर रहे थे। वे देहरादून पहुँचे। वहाँ औरतों ने अलग से कार्यक्रम रखा था। उसमें गाँधीजी को दो हजार रुपये की थैली भेंट की गई। उस मौके पर गाँधी जी ने भाषण दिया: ''मैं पैसे ही नहीं, जेवर भी लेता हूँ। सोने की अँगूठी देना हो तो तुम दे दो। गले की चेन हो तो दे दो। हाथ के कड़े हों तो दे दो। अपने मर्दों से मत पूछो। ये तो तुम्हारा अपना धन है। उनसे पूछने की क्या ज़रूरत?''

इतना कहकर गाँधी जी मंच से नीचे आ गए। उन्होंने औरतों के सामने हाथ फैला दिए।

फिर तो इधर से एक औरत कहती–'महात्मा जी यह ले लो।' उधर से दूसरी औरत कहती–'महात्मा जी यह ले लो।' धक्का-मुक्की होने लगी।

एक औरत कह रही थी:''ऐ महात्मा, ये इकन्नी तो ले जा।''

गाँधी जी ने कहा:''ला दे।''

उन्होंने इकन्नी ले ली। फिर गाँधी जी ने उस औरत से कहा: ''अभी तो तू मेरे पैर भी छुएगी न!''

औरत ने कहा : ''हाँ जरूर छूऊँगी।''

गाँधी जी ने कहा : ''तो जान ले इकन्नी और लूँगा।''

औरत ने ताना दिया : ''महात्मा क्या किराये पर छुआता है पैर तू।''

गाँधी जी ने कहा : ''हाँ, किराया देगी या नहीं?''

औरत ने एक और इकन्नी दी। गाँधी जी ने अपने पैर उसके सामने बढ़ा दिए।

❐❐

गाँधीजी उन दिनों नौआखली में थे। पत्रकार उनके साथ थे। एक पत्रकार ने उनसे पूछा: ''गाँधीजी बहुत साल पहले आपने कहा था कि आजाद भारत में मेहनत करने वालों को ही वोट देने का अधिकार होना चाहिए। अब भी आप इस बात को सही मानते हैं ?''

गाँधी जी ने जवाब दिया: ''बिल्कुल सही मानता हूँ। मरते दम तक मानूँगा। हर आदमी को मेहनत करना चाहिए। मेहनत करके खाना खाना चाहिए। रुपया पैसा इकट्ठा करके आराम से रहना हराम है।''

❐❐

गाँधी जी दंगे के बाद नोआखली जा रहे थे। चंदीपुर गाँव से चलने पर उन्होंने चप्पल पहनना भी छोड़ दिया। किसी ने पूछा: ''बापू, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं ?''

गाँधी जी ने कहा: ''हम मंदिर-मस्जिद या गिरजाघर में जूते-चप्पल पहनकर नहीं जाते। उन्हें बाहर उतार देते हैं। पवित्र स्थान पर हम जूते-चप्पल नहीं पहनते। मैं भी दरिद्र नारायण के पास जा रहा हूँ। गरीब-देवता के पास जा रहा हूँ तो चप्पल कैसे पहनकर जाऊँ ?

उनके सगे-सम्बन्धी लुट गए हैं। उनकी औरतों-बच्चों का कत्ल हुआ है। उनके पास लाज ढँकने के लिए कपड़ा तक नहीं है। मुझे ऐसे लोगों से मिलना है। मेरे लिए यह पवित्र यात्रा है। इस यात्रा में मैं चप्पल कैसे पहनूँ ?''

गाँधी जी के तलुवे बहुत मुलायम थे। नंगे पाँव पैरों में काँटे चुभे। बिवाइयाँ फटीं। लेकिन गाँधी जी ने चप्पल फिर भी नहीं पहनी।

❐❐

गाँधी जी रेल में सफर कर रहे थे। पास में बैठा एक आदमी बार-बार फर्श पर थूक रहा था। गाँधी जी ने उसे कुछ नहीं कहा; काग़ज के टुकड़े से फर्श को साफ कर दिया।

उसने फिर थूक दिया। गाँधी जी ने फिर से साफ कर दिया। वह बार-बार थूकने लगा। गाँधी जी बार-बार फर्श साफ करने लगे।

अगला स्टेशन आया। वहाँ बेहद भीड़ थी। जनता 'गाँधी

जी की जय' के नारे लगा रही थी। गाड़ी के रूकते ही कई लोग गाँधी जी की तरफ दौड़े। उन्हें नमस्कार किया। चरण छुए। गाँधी जी ने भी नमस्कार किया।

प्लेटफार्म पर गाँधी जी का बहुत स्वागत हुआ। यह देखकर थूकने वाले को बहुत शर्म आयी। वह गाँधी जी के पैरों में गिर पड़ा। उसने माँफी माँगी। गाँधीजी ने कहा: ''माँफी माँगने की इसमें क्या बात है। मैंने अपनी जिम्मेदारी पूरी की। अगली बार मौका आए तो तुम भी ऐसा ही करना।''

❑❑

गाँधी जी उन दिनों अजमेर में थे। हमेशा की तरह उनके पीछे-पीछे स्वामी लालनाथ भी भक्तों के साथ पहुँचे। स्वामीजी गाँधीजी के पीछे-पीछे चलते थे। जहाँ गाँधी जी जाते, वहाँ वे उन्हें गाँधी जी छूआछूत मिटाने की बात करते, तो स्वामी जी छूआछूत का समर्थन करते। कुल मिलाकर वे जगह-जगह गाँधी जी को परेशानी में डालते।

मगर गाँधी जी इससे परेशान नहीं थे। वे तो चाहते थे कि उनका विरोधी भी अपनी बात जनता से खुलकर कहे। वह हमेशा अपने साथियों और आम जनता को समझाते भी थे कि वे स्वामी जी पर गुस्सा न करें। उन्हें अपनी बात कहने दें।

इसके बावजूद अजमेर में गाँधी जी और स्वामी जी के लोगों में भिड़न्त हो गई। भिड़न्त में स्वामी जी को भी बहुत चोट लगी।

गाँधी जी इस बात से काफी परेशान हो गये । उन्होंने तुरंत

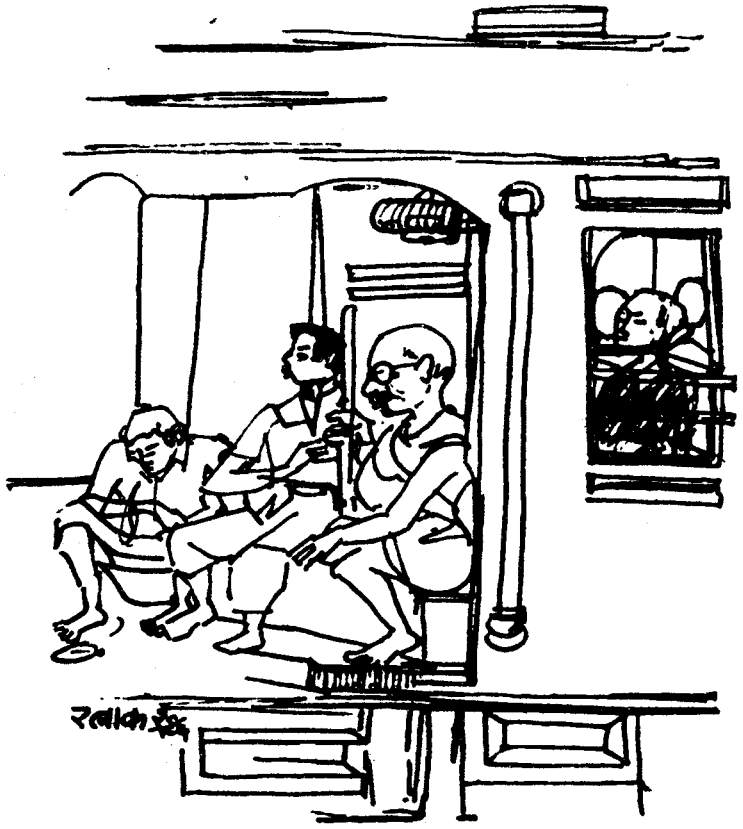

स्वामी जी की मरहम पट्टी करवाई। इतना ही नहीं, जब गाँधी जी भाषण देने खड़े हुए तो उन्होंने स्वामी जी को भी मंच पर बुलाया। उनके घाव जनता को दिखाए। लोगों को शर्मिन्दा किया। फिर उन्होंने स्वामी जी से अपनी बात इसी मंच से कहने के लिए कहा।''

उतना ही नहीं, उन्होंने स्वामी जी के साथ हुए इस व्यवहार के लिए सात दिन का उपवास रखकर प्रायश्चित भी किया।

❑❑

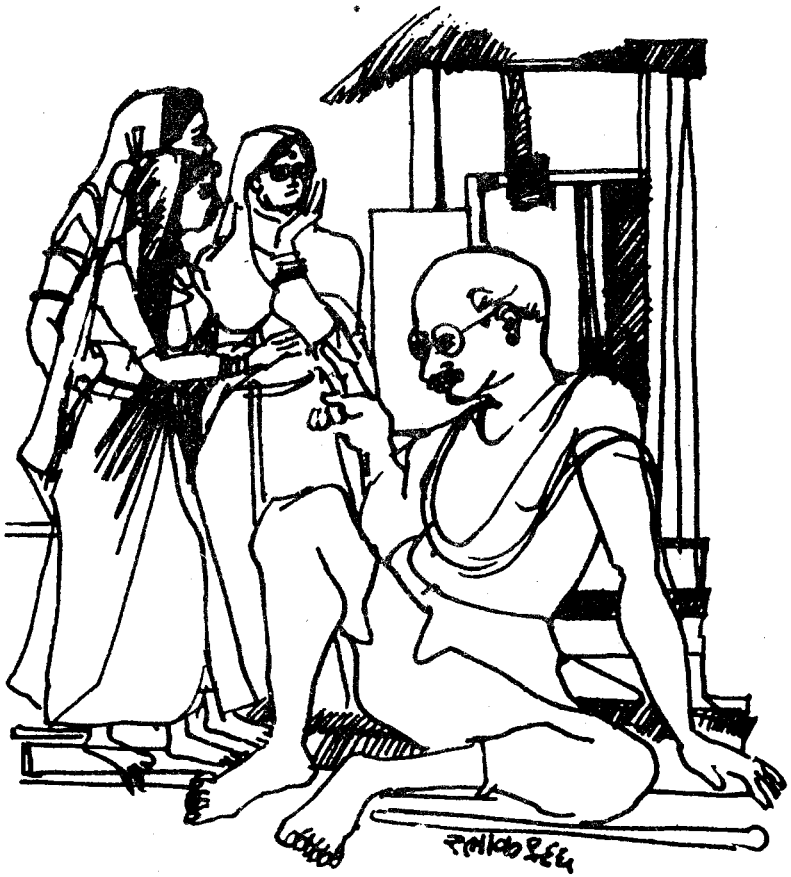

गाँधी जी के आश्रम में लड़कियाँ भी रहती थीं। वे कहीं से आश्रम वापिस आ रही थीं। तभी कुछ लड़कों ने उन्हें छेड़ दिया। लड़कियाँ भागकर आश्रम में आ गईं। उन्होंने गाँधी जी को सारी बात बताई।

गाँधी जी ने उनसे कहा: ''तुम भागी क्यों? तुम्हें भागना नहीं चाहिए था। लड़कों से लड़ना चाहिए था।''

एक लड़की ने कहा: ''तो लड़के हमें और भी ज़्यादा

छेड़ते।''

गाँधी जी ने कहा : ''तो उन्हें दो झापड़ रसीद कर देतीं।''

गाँधी जी की बात पर उन्हें भरोसा नहीं आया। गाँधी जी तो अहिंसा के पुजारी हैं और हिंसा की बात कर रहे हैं। लड़कियों ने जवाब दिया: ''किसी को झापड़ मारना तो बापू, हिंसा है।''

गाँधी जी ने जवाब दिया: ''अहिंसा के बुर्के में अपनी कमजोरी को छुपाना ठीक नहीं है।''

❐❐

महात्मा गाँधी मसूरी में थे। पत्रकार उनके पीछे-पीछे थे।

एक पत्रकार ने उनसे पूछा: ''महात्मा जी अगर आपको एक दिन के लिए भारत का तानाशाह बना दिया जाए तो आप क्या करेंगे?''

गाँधी जी ने कहा: ''मैं बनूँगा ही नहीं।''

पत्रकार ने कहा: ''मान लो आपको जबर्दस्ती बना दिय तो!''

महात्मा जी ने जवाब दिया: ''तो मैं हरिजनों के झोपड़ों में सफाई करूँगा।''

पत्रकार ने फिर कहा: ''मान लो आपको दो दिन के लिए तानाशाह बना दिया तो आप दूसरे दिन क्या करेंगे?''

महात्मा जी ने जवाब दिया: ''दूसरे दिन भी हरिजनों के झोपड़ों में सफाई ही करूँगा।''

❐❐

सेगाँव आश्रम में गाँधी जी शीशा सामने रखकर मशीन से अपने बाल काट रहे थे। उधर से उनके साथ आश्रम में रहने वाले एक साधु गुजरे। उन्होंने यह नजारा देखा। उनके पीछे उनका चेला भीमा भी था। भीमा नाई था। बाल काटना खूब जानता था।

साधु ने कहा: ''बापू जी, भीमा अच्छे बाल काटता है। आप इससे कटवा लीजिए न।''

गाँधी जी तैयार हो गए। भीमा उनके बाल काटने लगा।

थोड़ी देर बाद गाँधी जी बोले: ''क्यों भाई भीमा, तुम हरिजनों के भी बाल काटते हो।''

भीमा कुछ हिचकिचाया। फिर उसने कहा: ''दिल से तो मैं सबको एक समझता हूँ।''

भीमा न सीधा जवाब नहीं दिया। गाँधी जी सारी बात समझ गए। वे बोले: ''साफ-साफ बताओ। तुम हरिजनों के भी बाल बनाते हो?''

भीमा को मन से हरिजनों के बाल काटना पसन्द नहीं था। वह चुप रहा।

इस पर गाँधी जी ने कहा:''तो तुम जाओ! मेरे भी बाल मत काटो।''

भीमा को अब अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने कहा: ''नहीं गांधी जी, ऐसा मत कहिए। अभी तक तो मैं हरिजनों के बाल बेमन से कभी-कभी काटता था। अब मैं बेझिझक काटूँगा।''

यह सुनकर गाँधी जी भीमा से बहुत खुश हुए।

❐❐

घनश्यामदास बिड़ला ने दिल्ली से लगभग पाँच किलोमीटर दूर चर्मालय और हरिजन विद्यार्थियों के छात्रावास के लिए ज़मीन खरीदी थी। वे चाहते थे कि गाँधी जी खुद वहां एक रात बिताकर इस ज़मीन का 'शुभ मुहूर्त' करें। गाँधी जी मान गए।

उनके लिए वहाँ एक शानदार झोपड़ी बनाई गई। उसके अंदर गए तो देखा कि खूब सजी-धजी है। देखते ही गाँधी जी

नाराज हो गए। उन्होंने पूछा: ''यह झोपड़ी है या राजमहल? इसे बनाने के लिए तुमने हजारों रुपये खर्च किए होंगे। मिट्टी की कच्ची दीवारों पर छप्पर छाया होता तो यह झोपड़ा होता। यह झोपड़ा नहीं हैं। झोपड़े का मजाक है।''

उन्होंने शाम को देखा कि बिस्तर के पास उनके लिए पीतल की बढ़िया थूकदानी रखी है। उन्होंने पूछा: ''यह किसने मँगवाई है?''

ब्रजकृष्ण चांदीवाला ने कहा: ''मैंने।''

गाँधी जी ने कहा: ''इतनी महँगी थूकदानी की क्या ज़रूरत थी?''

चांदीवाला ने कहा: ''मैंने एक आदमी से लाने के लिए कहा था। मैंने समझा कि यह घर से ले आएगा। घर पर नहीं मिलेगी तो चार-पाँच आने की सस्ती खरीद लाएगा। मगर वो ये ले आया।''

गाँधी जी बोले: ''चार-पाँच आने की होती तो तुम्हें ऐतराज न होता? इसी तरह तुम गाँवों की सेवा करोगे? यहाँ गाँव में मिट्टी का सकोरा पैसे-दो पैसे में मिल जाएगा। इसे फौरन वापस करो।''

रात को उनके लिए खटिया लगाई गई। गाँधी जी ने उस पर सोने से मना कर दिया। उन्होंने कहा: ''चटाई पर गद्दी बिछा दो।''

वहाँ पास में खड़े एक आदमी ने धीरे से कहा: ''बापू, मगर गरीब से गरीब आदमी खटिया पर सोता है।''

गाँधी जी ने कहा: ''मुझे यह मत बताओ। क्या हम सिर्फ खटिया पर सोने के मामले में गरीबों की बराबरी करेंगे? बराबरी करना हो तो उनके जैसा खाओ। उनके जैसे कपड़े पहनो। यह नहीं हो सकता तो कुछ तो त्याग करो। कम से कम चारपाई पर तो मत सोओ। पूरा ग्रामीण बनने में तो शायद हमें कई जन्म लग जाएँगे।''

❐❐

गाँधी जी तीसरे दर्जे के डिब्बे में जम्मू से लौट रहे थे। रास्ते में बारिश हुई। डिब्बा चूने लगा। चारों तरफ पानी ही पानी हो गया। अगले स्टेशन पर गार्ड आया। उसने कहा: ''बापू, आप डिब्बा बदल लीजिए।''

गाँधी जी ने कहा: ''तो आप इस डिब्बे का क्या करेंगे?''

गार्ड ने कहा: ''मैंने आपके लिए एक अच्छा डिब्बा खाली करवाया है। उसके यात्रियों को यहाँ बैठा दूँगा।''

गाँधी जी ने जवाब दिया: ''अगर वे इस डिब्बे में बैठ सकते हैं तो मैं क्यों नहीं बैठ सकता? मेरे लिए दूसरों को तकलीफ क्यों दे रहे हो?''

यह सुनकर गार्ड चुप हो गया। वह कुछ देर बाद बोला: ''मैं अपाके और क्या काम आ सकता हूँ?''

गाँधी जी ने कहा : ''आप मेरे बहुत काम आ सकते हैं। आप गरीबों को तंग न करें। उनसे रिश्वत न लें। यह मेरी बहुत बड़ी सेवा होगी।''

❐❐

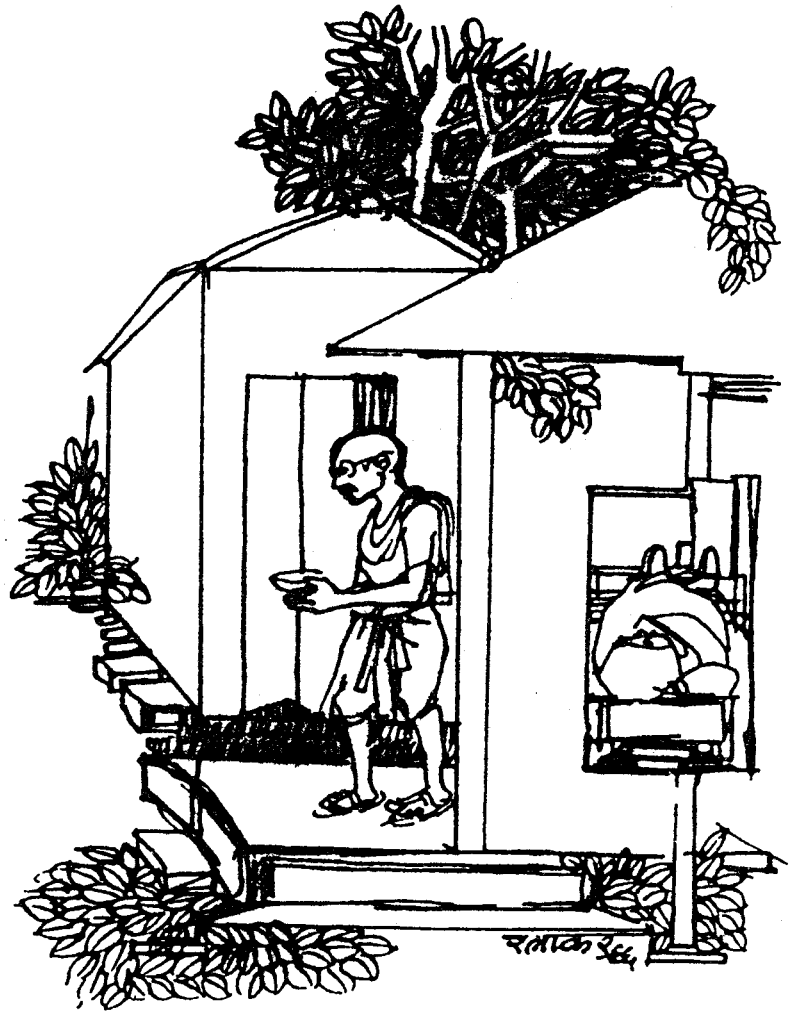

वैसे तो गाँधी जी की जीवनसाथी कस्तूरबा की बीमारी के समय छगनलाल गाँधी की पत्नी उनका हमेशा ख्याल रखती थीं। लेकिन गाँधी जी जब भी साथ होते, तो वे सारा काम खुद करते। वे हर काम को हाथ में ले लेते।

वे कहते थे: ''बा का काम मुझे करने दो। उनको आराम

कैसे दिया जाए, इसका पता मुझे ज्यादा है। जब मैं यहाँ न होऊँ, तब तुम बा का काम किया करो।''

वह थूकदान को बार-बार साफ करते। बा के टट्टी-पेशाब के बरतन को धोकर साफ करते। पीने के लिए पानी गर्म करते। पानी में जरा-सा भी कचरा दिख जाए तो उसे छानते। सारा समय चारपाई के पास खड़े रहते। कुर्सी-स्टूल पर भी नहीं बैठते। फिर भी उनके चेहरे पर न थकावट होती, न उदासी।

❐❐

अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आंदोलन शुरू ही हुआ था। इस बीच चौरी चौरा में हिंसा हो गई। इससे दुखी होकर गाँधीजी ने सत्याग्रह बंद कर दिया।

गाँधी जी को सत्याग्रह रोकने का फैसला कांग्रेस के कुछ नेताओं को पसंद नहीं आया। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में गाँधी जी की खूब आलोचना भी हुई। उन्हें बहुत बुरा-भला कहा गया। (गाँधी जी के भक्तों को इससे बहुत दुख पहुँचा। उन्होंने गाँधी जी से अपने मन की यह बात कही।

गाँधी जी का जवाब था: ''मुझे तो दुख नहीं हुआ। उनका विरोध करना अच्छा ही लगा। जो लोग मेरा खुल्लम-खुल्ला विरोध कर सकते हैं, वे दुनिया में किसी से नहीं डरेंगे। वे किसी के आगे नहीं झुकेंगे।''

❐❐

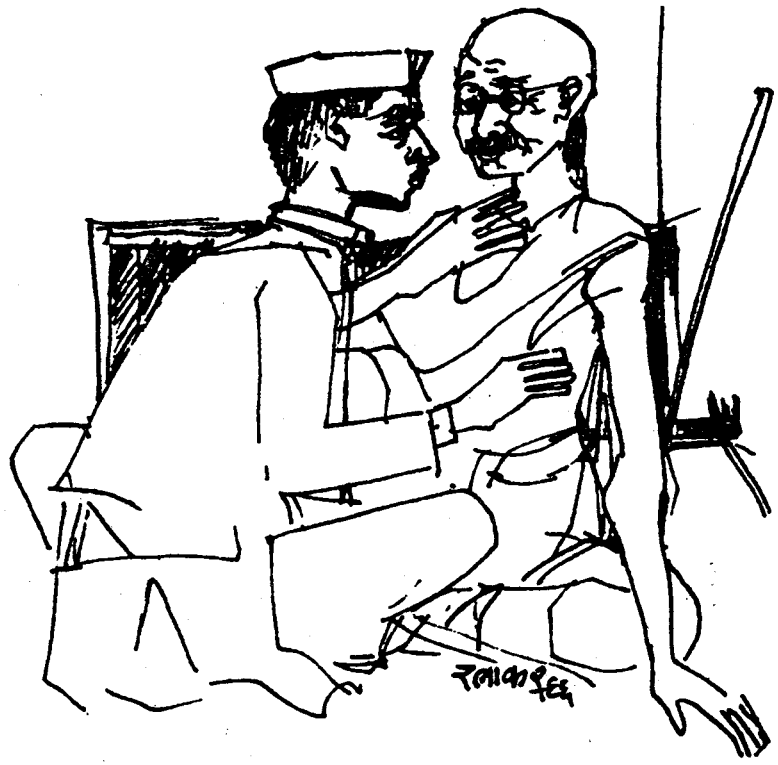

1924 की बात है। उस समय देश में हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे थे। गाँधी जी दिल्ली में मौलाना मोहम्मद अली के मकान में ठहरे हुए थे। जवाहरलाल नेहरू उनसे मिलने आए। पंडित सुन्दरलाल भी उस समय वहाँ थे। बातचीत होने लगी। पंडित सुंदरलाल ने कहा: ''बापू, क्या इस तरह हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता हो जाएगी?''

गाँधी जी ने पूछा: ''किस तरह?'' जवाहरलाल नेहरू ने जवाब दिया: ''क्या हिन्दू-हिन्दू रहकर और मुसलमान मुसलमान रहकर कभी भी एक हो सकते हैं?''

गाँधी जी ने कहा: ''एक तो तब होंगे न, जब इंसान

बनेंगे। सारे हिन्दू मुस्लिम भगवान में भरोसा रखना भी छोड़ दें तो मुझे घबराहट नहीं। इनके न मानने से ईश्वर तो खत्म नहीं हो जाएगा। लेकिन ये इंसान तो बनें। लेकिन मेरी कौन सुनता है? इन्होंने कबीर की बात नहीं सुनी। नानक की बात नहीं सुनी। हम-तुम इनके लिए क्या हैं? ये तो अपने ही रास्ते पर चलेंगे।''

इतना कहकर गाँधी जी चुप हो गए। उनके चेहरे से तकलीफ झलक रही थी। अगले ही दिन से उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए उपवास शुरू कर दिया।

❐❐

1921 में महात्मा गाँधी दक्षिण भारत के दौरे पर थे। वे रेल से सफर कर रहे थे। गाँधीजी ने कुछ यात्रियों से बातचीत शुरू की। उनसे कहा कि तुम्हें खादी के कपड़े पहनना चाहिए। इन यात्रियों में से एक ने कहा: ''बापू हम गरीब हैं। खादी बहुत महँगी है। हम चाहकर भी खादी के कपड़े नहीं पहन सकते।''

गाँधी जी को यह सुनकर बहुत दुख हुआ। उनके मन में खलबली सी मच गई! ''एक मैं हूँ। मैं धोती, कुर्ता और टोपी पहने हूँ। एक ये हैं। इन जैसे करोड़ों इंसान हैं। ये लंगोटे के सिवाय कुछ नहीं पहन सकते। मजबूरन इन्हें नंगा रहना पड़ता है। मुझे भी सभ्यता की सीमा में कम-से-कम कपड़े पहनने चाहिए।''

तभी से उन्होंने तय कर लिया कि वे धोती के टुकड़े के सिवाय कुछ नहीं पहनेंगे।

❐❐

गाँधी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए दिल्ली में उपवास कर रहे थे। दिन-पर-दिन वे दुबले होते जा रहे थे। डॉक्टरों ने उनसे आराम करने के लिए कहा।

लेकिन घर के बाहर हजारों लोगों की भीड़ थी। उसी भीड़ में गाँव से आये पति-पत्नी भी थे। वे स्वयंसेवकों का घेरा

तोड़कर आगे आ गए थे। वे किसी भी तरह गाँधी जी से मिलना चाहते थे।

दरअसल गाँव में उनका इकलौता बेटा बीमार था। उसे किसी दवाई से फायदा नहीं हो रहा था। उसकी हालत लगातार बिगड़ती जा रही थी। इसलिए वे गाँव के कुएँ से पानी लाए थे। उस पानी से वे गाँधी जी के पैर पखारना चाहते थे। उस पानी को चरणामृत की तरह अपने बच्चे को पिलाना चाहते थे, ताकि वह ठीक हो जाए।

गाँव से आए ये पति-पत्नी जिद्द पर अड़े थे। वे किसी भी तरह मान नहीं रहे थे। गाँधी जी को यह बात बताई गई। उन्होंने कहा कि इन्हें अंदर बुलाओ।

पति-पत्नी अंदर आए। गाँधी जी के सामने बैठ गए। तब गाँधी जी ने कहा: ''तुम मेरे पैर का गंदा पानी अपने बेटे को पिलाओगे? साफ-सफाई की इतनी छोटी सी बात भी तुम्हें नहीं मालूम? तुम्हारा बेटा इस पानी से अच्छा होगा या ज्यादा बीमार हो जाएगा? अरे कुछ तो समझो। जाओ और अपने बच्चे को किसी अच्छे डाक्टर को दिखाओ। वह अच्छा हो जाएगा।''

❐❐❐❐